पुस्तक समीक्षा

भारतीय समाजशास्त्र समीक्षा
8(2) 248–249, 2021
© 2021 Indian Sociological Society
Reprints and permissions:
in.sagepub.com/journals-permissions-india
DOI: 10.1177/23491396211063949
http://bss.sagepub.in

रेमन जहानबेग्लू (2021), *पेडागॉजी ऑफ डिसेंट, हैदराबाद: ओरिएंट ब्लैकस्वान*. पीपी. 1-96., पीपी. 93; कीमत रु. 283 पेपरबैक, ISBN 978-81-949258-5-9.

लाइफ ऑफ गैलीलियो पर अपनी पुस्तक में, बर्टोल्ट ब्रेख्त लिखते हैं: 'दुखी वह भूमि है जहाँ नायकों की आवश्यकता होती है'। लेकिन ऐसा ही एक समुदाय है जिसका असहमति के लिए कोई उपयोग नहीं है। हालाँकि, असहमति को राजनीतिक निर्णय लेने का एक सरल कार्य मानना गलत होगा। असहमति न तो राजनीतिक रणनीति है और न ही सांस्कृतिक घटना। असहमति अंतर को व्यक्त करने और सामाजिक वास्तविकता, अन्याय और असमानता पर सवाल उठाने का एक तरीका है। इसलिए असहमति हमें कभी नहीं दी जाती है बल्कि समाज और दुनिया के साथ एक महत्वपूर्ण जुड़ाव के माध्यम से संघर्ष किया जाता है और हासिल किया जाता है। एक असहमति वह है जिसके पास अपने बौद्धिक, सौंदर्य और नैतिक मूल्यों का पुन रुत्पादन करके समाज में मौजूदा मानक सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मानदंडों को चुनौती देने और नष्ट करने की क्षमता है।

समीक्षाधीन पुस्तक में छह अध्याय हैं ये हैं। I. परिचय: असहमति और असहमति का मानचित्रण, II. मैल्कम एक्स: बाहरी असहमति, III. पाउलो फ्रेयर: शिक्षित असहमति, IV. गुस्तावो गुटिरेज़: धार्मिक असहमति, वी. बी.आर. अम्बेडकर: साहसी असहमति तथा VI. निष्कर्ष: वर्तमान के खिलाफ असहमति। प्रसिद्ध दार्शनिक रमन जहानबेग्लू ने प्रमुख ऐतिहासिक हस्तियों के जीवन और कार्यों के अध्ययन के माध्यम से, जिन्होंने सत्ता और शक्ति के लिए सच बोला और जिन्होंने अपने साहस और अखंडता, नैतिक और बौद्धिक द्वारा मौलिक मानवाधिकारों और स्वतंत्रता के लिए प्रयास किया, यह दर्शाता है कि उनकी शिक्षाशास्त्र कैसे असहमति हमें नैतिक और राजनीतिक को एक ही सिक्के के दो पहलू के रूप में समीक्षा करने में सक्षम बनाती है। सुकरात, मैल्कम एक्स, गांधी, पाउलो फ्रेयर, गुस्तावो गुटिरेज़ और बी.आर. अम्बेडकर सहित ये मूर्ति भंग- उन सभी के लिए प्रेरणा बने हुए हैं जो मानते हैं कि लोकतंत्र की स्थायीता के लिए असहमति की शक्ति महत्वपूर्ण है। उनकी विरासत आज की तरह अधिक गूंजती और प्रासंगिक कभी नहीं रही, जब नागरिक स्थान और सत्ता के अत्याचार पर सवाल उठाने की स्वतंत्रता विश्व स्तर पर खतरे में है। इस संदर्भ में, आत्म-परीक्षा की सुकराती पद्धति, गांधीजी की अवज्ञा का दर्शन, मैल्कम एक्स की शिक्षा शास्त्र जातिवाद और असमानता पर सरल चिंतनशील सोच से कहीं आगे है, पाउलो फ्रेयर मुक्ति की ओर निर्देशित करते हैं, गुस्तावो गुटिरेज़ की असहमति की शिक्षा धार्मिक विश्वास और मुक्तिवादी धर्मशास्त्र को सामाजिक न्याय की दिशा में काम करती है और बी.आर. अम्बेडकर ने भारतीय समाज में सामाजिक और आर्थिक असमानता के विचार की

घोषणा की, व्यक्तिगत स्वायत्तता और कार्रवाई के एक कट्टरपंथी उत्पाद के रूप में असंतोष के लिए एक शैक्षणिक दृष्टिकोण का सबसे अच्छा उदाहरण है।

असहमति के लिए कोई शाही रास्ता नहीं होता है, और हम असहमति को नहीं समझ सकते हैं यदि हम उस विचार प्रक्रिया की उपेक्षा करते हैं जिसके द्वारा व्यक्ति असंतुष्ट हो जाते हैं और असंतुष्टों के रूप में सोचने लगते हैं। इस अध्ययन में जिन असंतुष्टों की चर्चा की गई है, वे दार्शनिक, शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता और धर्मशास्त्री थे, लेकिन निश्चित रूप से नए धर्मों के संस्थापक नहीं थे। उनमें से कोई भी निर्विवाद शिष्यों की तलाश में नहीं था, न ही वे अविवेकी जनता के नेता बनने की इच्छा रखते थे। इसके विपरीत, असहमति के ये शिक्षक गहरी आलोचनात्मक सोच वाले थे, साथ ही साथ आलोचना को भी स्वीकार करते थे,जो नीत्शे के अनुसार 'संस्कृति का एक उच्च संकेत है'। यह बिना कहे चला जाता है कि नीत्शे जिस 'संस्कृति के उच्च चिन्ह' के बारे में बात करता है, वह असहमति और असहमति के प्रत्येक मामले में, एक प्रकार की बौद्धिक और नैतिक अखंडता और आत्मा के बड़प्पन द्वारा अनुकरणीय है। यहां बड़प्पन न तो जन्म का है और न ही सामाजिक स्थिति का, बल्कि नैतिक और बौद्धिक साहस, अखंडता और ज्ञान का है। इसका तात्पर्य उत्कृष्टता के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों तरह के अस्तित्व की एक संहिता से है, और जिसे अरस्तू ने 'अच्छा' कहा था।

इस प्रकार असहमति का शिक्षाशास्त्र उस प्रक्रिया से संबंधित है जिसके द्वारा नागरिकों को आरोप के एजेंट के रूप में शिक्षित किया जाता है, और सामूहिक उदासीनता, स्वार्थ और भय के खिलाफ एक उच्च अंतःकरण, साहस और मानवीयता विकसित होती है, अपने भाग्य के नियंत्रण में एक रूपांतरित और सशक्त मानवता के लिए संघर्ष।

असहमति में शिक्षाशास्त्र हमें एक ही सिक्के के दो पहलुओं के रूप में नैतिक और राजनीतिकता की समीक्षा करने में सक्षम बनाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि सामाजिक जीवन परिवर्तन के अधीन है, तो उसके प्रति हमारा नैतिक दृष्टिकोण भी है। इसलिए, पुस्तक सभी पाठकों के लिए प्रासंगिक है कि यह समझें कि मानव स्वायत्तता, इच्छा और एजेंसी के अभ्यास के रूप में असहमति की शिक्षा हमारी सभ्यता की विरासत का एक अभिन्न अंग है।

जे. पी. भट्ट
सहायक आचार्य
समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग
हे. न. ब. ग. वि. वि.
श्रीनगर उत्तराखंड
ई-मेल: jphnbgu@gmail.com